महिला जागरूकता में मीडिया की भूमिका

*कु. अंकिता फौजदार

आज के परिवार में महिला को जागरूक करने के लिए मीडिया का सहयोग सरहानीय है। हमारा देश पुरूष प्रधान देश है जहां पर सभी प्रकार के अधिकार, निर्णय पुरूषों द्वारा लिए जाते रहे हैं। स्वतंत्रता के लिए भी महिलाओं का योगदान रहा। किन्तु कहीं न कहीं महिलाओं को संस्कारों रीति रिवाजों के नाम पर आगे नहीं बढ़ने दिया फिर एक पहल की गई श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा एवं मिडिया का शत् प्रयास रहा है

महिला जागरूकता के लिए मीडिया द्वारा महिला की जीवन शैली में आया परिवर्तन —सोच ही बदलती है जीवन को आर्थिक स्तर सुधारता है सोच को आपसी समझ सहयोग बढ़ाता है। प्रेम को और सही सोच, समझ, प्रेम, प्रोत्साहन सहयोग करता है। जागरूकता लाने के लिए समाज को बदलना है तो रूढ़ि वादिता को दूर करना है।

समाज में मीडिया द्वारा महिला में जागरूकता

आज समाज को जागरूक करने में मिडिया का बड़ा हाथ है। समाज में महिलाओं की दशा को दिखाया जाना अच्छे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करना व देख कर दूसरी महिलाओं का आत्मबल बढ़ना कुछ करने की आशा जागरूक होना। देवी का रूप धारण कर बुराईयों को नाश कर विजय का झंडा गड़ाना। कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ना, समाज का उद्यान करना। मीडिया ने पहचान करायी मदर टेरिसा से, अरूंधति राय, मेघा पाटकर राजनीति में मिलता महिलाओं को स्थान — मीडिया के सहयोग से जाना इतिहास। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए महिलाओं ने दिया योगदान झांसी की रानी हो या सरोजनी नायडू। प्राकृतिक नियम है बदलाव अब महिला ने पैर बढ़ाए हैं राजनीति की और प्रधानमंत्री हो (श्रीमती इंदिरा गॉधी) या राष्ट्रपति हो (श्रीमती प्रतिभा पाटिल) मुख्यमंत्री (श्रीमती शीला दीक्षित, सुश्री मायावती, श्रीमती वसुंधरा राजे)। कहीं विरासत में राजनीति तो कहीं मीडिया ने कराया नये चेहरों से रूबरू। जो पिछले दशकों में नहीं कर पाया भारत वो पिछले कुछ वर्षों में कर दिखाया भारत ने। घर को चलाने संभालने वाली होती है। ग्रहणी जो रहती पर्दे के पीछे। मीडिया ने बदलाव लाया और आज हमारा मुल्क है, हमारा आशियाना। आज महिलाओं के हाथों में है यह कारनामा ''बदल दिया है देश का रूप मीडिया ने दिखाया है जिसका स्वरूप'' इसलिए कहते हैं अब महिला को मेनेजमेंट का गुरू।

एक शिक्षित राष्ट्र का निर्माण :— भारत में अनेकता में एकता है। भारत में कई भिन्न—भिन्न क्षेत्र हैं। किसी प्रदेश में शिक्षा का महत्व है, तो कहीं निम्न हैं। भारत में लाना है एकजुटता, मीडिया है जिसका सहारा। कहीं महिलाएं उड़ाने भर रही हैं, तो कहीं महिलाएं चूल्हा फूंक रही हैं। टी.वी., रेडियो बना है माध्यम करेगा दूर कुरूतियों को। हर महिला, हर बच्ची पढ़ेगी, बढ़ेगी, देश का विकास करेगी। ''दूर नहीं दिखता है अब नासा हर महिला के दिल की है आशा कब छू लू चांद, तारों को कब मिल जाए देश को सितारा।''

21वीं शताब्दी में महिला की भूमिका

आज मीडिया की सहायता से अपना स्थान बना चुकी हैं। बंदिसों को तोड़ चुकी हैं। चार दीवारी से बाहर निकल चुकी है। मानव पीड़िता को समझती है महिला, श्रद्धा भाव से करती है चिकित्सालय में कार्य। हवाई जहाज उड़ाती है महिला कल्पना चावला, सुनीता भी है अस्मरणीय। संगीत की दुनिया में लता जी, आशा जी का नाम सर्वप्रथम। चाहे देश की सुरक्षा क्यों ना हो इनके इरादे हैं मजबूत हर दम। सरहद पर डटे रहना है बंदूक को हाथों में थामें रहना है निडर हैं हम बम गोले तोप क्या हैं। हमारे आत्म बल को देख, दुश्मानों को भी राख होना है। वही मीडिया ने पहचान करायी किरण बेदी से। खेल जगत में नेहा नहरवाल, सानिया मिर्जा, पी.टी. ऊषा से आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जो महिलाओं से अछूता है खेत खलिहानों में हल हो या वैज्ञानिक क्षेत्र में कम्प्यूटर सभी क्षेत्र में महिलाओं ने अधिकार जमाया है। अपने ज्ञान को दिखाया है।

महिला जीती म्यूजियम लाइफ आया अब बदलाव

एक समय था जब महिला म्यूजियम लाइफ निर्वाह कर रही थी, कुएं की मेंढक बनी थी। लेकिन मीडिया ने क्रांति लाया। महिला के जीवन को प्रभावित किया। लड़ने समझने का ज्ञान प्राप्त कराया। बाहरी दुनिया से अवगत कराया। सही—गलत के निर्णय का अधिकार दिया। रोटी, कपड़ा, आभूषण के अलावा की जिंदगी दिखायी। अपने पैरों पर खड़े होने का मौका मिला। हौसले बुलंद हुए तो घरों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।

* शोध छात्रा, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

एक महिला का विकास हुआ तो एक घर का विकास हुआ घर का विकास हुआ तो प्रदेश का विकास हुआ प्रदेश का विकास हुआ तो देश का विकास हुआ आज महिला ही आधुनिक भारत की निर्माता है और सहयोगी है मिडिया।

महिला अधिकारों को संरक्षित करता मीडिया

मीडिया का शतत् प्रयास रहा है संदेश देना चाहे टी.वी. ही माध्यम क्यों न हो। टी.वी. धारावाहिक के सहारे देता संदेश। आज प्रकाशित होने वाले टी.वी. धारावाहिक बालिका वधु या इस देश ना आना लाड़ों यह सभी संदेशप्रद धारावाहिक हैं। रीतिरिवाजों के तले बच्चों का बाल विवाह कराना, बेटी पैदा होते ही मार डालना। संस्कार के नाम पर महिलाओं, बालिकाओं की एक सीमा निर्धारित कर देना। बालक–बालिकाओं में होता आ रहा भेद। बढ़ती घरेलू हिंसा। इन सभी कुरितियों पर विराम लगाने के लिए मीडिया प्रयासरत है। आप की कचहरी किरण बेदी के साथ ये मीडिया की अच्छी पहल रही। जिसमें महिलाओं के कानूनी अधिकारों को बतलाया और हो रहे जुल्म से मुक्ति दिलाना ही जिसका उद्देश्य है। आज महिला अपने कानूनी अधिकार का प्रयोग कर सकती है और माँ चाहती है अगले जन्म मुझे बिटिया ही देना। दहेज प्रताड़ना हो, दहेज प्रथा को बंद कराने में कुछ हद तक सहायक हुआ है मीडिया। लेकिन आज भी महिला घर की इज्जत की खातिर कानून के दरवाजे खट–खटाने से डरती है और अपने ऊपर हो रहे जुल्म को सहती है। आज मीडिया द्वारा महिलाओं का सम्मानित किया जा रहा है। जिस महिला की गोद में समाज और देश का भविष्य पलता है अगर उसे सिर उठाकर इज्जत के साथ जीने का मौका नहीं मिले तो कोई समाज, देश सही मायने में आगे नहीं बढ़ सकता।

सारांश – मीडिया की भूमिका ना केवल जागरूकता में रही आपितु मीडिया ने हर क्षेत्र में जागरूकता लाया है। आज मीडिया के सहारे निर्भय समाज बनाना चाहते हैं। महिलाओं को शक्ति का रूप माना है जिसे हम मिडिया का सहयोग लेकर सच्चाई में बदलना है। मीडिया ने महिलाओं को बड़ी–बड़ी जिम्मेदारी देकर महिला जागरूकता में सफल प्रयास किया है। खेल क्रांति हो या आर्थिक क्रांति महिला अपने दृढ़ पर डट कर खड़ी है। आज महिलाओं में नेतृत्व की भावना है चाहे श्रीमति सोनिया गांधी, श्रीमति प्रतिभा पटेल हो, श्रीमति सुषमा स्वराज हो। आज हर गांव पंचायत राज हो या राष्ट्रपति हो महिला अपना स्थान ग्रहण कर चुकी है। मुश्किलों का काल लांग चुकी हैं। कुरितियों का बहिष्कार करती है। आज महिला आत्म विश्वासी आत्म सहयोगी है। महिला ही वातसल्य लुटाती महिला ही शिव शक्ति बन जाती है। दुष्कर्मियों का नाश और फैलाती है चहु ओर प्रकाश।